ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.01, May : 2023

युगानुरूप दर्शन–आध्यात्मिक विकासवाद : महर्षि अरविन्द के संदर्भ में

दीपमाला कुमारी : शोध छात्रा, स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र–विभाग, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

युग की मांगों के अनुसार दर्शन का चिरंतन सत्य नवीन रूपों में उपस्थित किया जाना चाहिये। यदि दर्शन को कुछ वाक् चतुर वितंडावादियों तक सीमित नहीं रहना है, बल्कि मानव जाति की सेवा करनी है तो उसको हमारे युग की मांगों के अनुसार बनना होगा। जगत, ईश्वर और व्यक्ति की त्रिपुटी के किसी भी अंग का निषेध करने वाला विश्वरूप दर्शन सर्वांग सत्य से पीछे ही रह जाता है। निराशावाद और पलायनवाद के अपने कारण हैं, परन्तु वे सम्पूर्ण सत्य का प्रतिनिधित्व नहीं करते । जीवन की दुःख के रूप में व्याख्या, जीवन से उस दुर्दम्य मोह की विवेचना नहीं कर सकती, जिसको हम अपने चारों ओर देखते हैं। ज्ञान की प्रत्येक शाखा में आवश्यकता से अधिक वाद और विवाद हो चुके हैं। समन्वय की आवश्यकता आज सर्वविदित है, परन्तु यह समन्वय एकत्रीकरण अथवा संयोगमात्र नहीं होना चाहिये। अन्य सभी को एक सर्वांगपूर्ण में समन्वित करने वाला गतिशील दृष्टिकोण ही इस कार्य को कर सकता है। फिर, कोई भी आधुनिक दर्शन विज्ञान के निष्कर्षो की अवहेलना नहीं कर सकता, यद्यपि मूल्य भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने कि तथ्य । विज्ञान द्वारा सिद्ध विकास के सिद्धान्त को पाश्चात्य दर्शनिकों ने ग्रहण कर लिया है। आवश्यकता है उसके पूर्वीय आध्यात्मिक दृष्टिकोण से समन्वय की। यदि विकास को अनुभव के कुछ एकांगी तथ्य मात्र की नहीं बल्कि विश्व विधान की व्याख्या करनी है तो उसको आध्यात्मिक विवर्तन होना चाहिए। जैसे ज्ञान और क्रिया की अन्य शाखाओं में वैसे ही दर्शन में पूर्व और पश्चिम का एक समन्वय विकसित होना चाहिये। यह आत्मा, विकास और अनुभव के प्रत्यय की समस्याओं के विशेष प्रसंग में होना चाहिये। पाश्चात्य दर्शनिकों को अपना क्षेत्र बढ़ाकर उसमें सभी प्रकार के अनुभव विशेषतया गुह्य, धार्मिक और आध्यात्मिक इत्यादि सम्मिलित कर लेने चाहिये। मात्मा के एक यथार्थ ज्ञान पर पहुँचने के लिये पश्चिम की मनोवैज्ञानिक खोजों के साथ पूर्व के आध्यात्मिक अनुभव का समन्वय होना चाहिये।

सांख्य दर्शन अति प्राचीन दार्शनिक परंपराओं में से एक है। द्वैतवादी सांख्य विश्व के विकास को अचेतन प्रयोजन से युक्त बतलाता है। प्रकृति जड़ हैं जबकि पुरुष चैतन्य प्रकृति से 23 तत्वों की विकृति एवं विकास का दर्शन अपने आप में विशिष्ट है। श्री अरविन्द अद्वैतवादी दृष्टि से भी विकास की बात करते हैं। जड़पदार्थ, जीवन, चित्त, मन, अतिमन और सच्चिदानन्द आदि का आरोहण एवं अवरोहण की दोनों तरफ गतिशील विकासवादी दृष्टि काफी व्यापक मानी जाती है। सांख्य और श्री अरविन्द के विकासवादी विचारों में भिन्नता भी है। डार्विन वैज्ञानिक विकासवादी विचारों को स्थापित करने वाले महत्वपूर्ण विचारक हैं। लेकिन उसमें भी जैविक विकास की व्याख्या के लिए कई जगह परिकल्पनाओं को प्रयोग में लाया गया। डार्विन संभवतः अपने विकासवादी व्याख्या में आत्मा, मन, बुद्धि, अतिमानस आदि को शामिल भी नहीं करते हैं। सांख्य दर्शन और श्री अरविन्द दोनों विकासवादी हैं। अद्वैतवादी श्री अरविन्द विश्व का विकास क्रमिक रूप में मानते हैं, जो जड़, प्राण, मन, अतिमन से सच्चिदानन्द स्वरुप तक विकसित होता है। श्री अरविन्द के अनुसार किसी व्यक्ति की मुक्ति अंतिम रूप से तभी होगी जब संसार के सभी व्यक्ति पूर्णत्व प्राप्त कर लेंगे। जब विश्व भर में मानस का अतिमानस में पूर्ण विकास हो जायेगा। उनका मानना है कि वर्तमान में विश्व मानस अवस्था के युग में है। अब समय आ गया है कि मानस अतिमानस में उन्नत हो। वर्तमान में विभिन्न सामाजिक तथा राष्ट्रीय संघर्ष, सम्प्रदायवाद, जातिवाद, भेदभाव, दुःख, अन्याय, अत्याचार, युद्ध, विनाश इन सबसे मुक्ति पाने का एकमात्र उपाय अतिमानस अवस्था को प्राप्त करने में है। अन्य सब उपाय तात्कालिक एवं आंशिक फलदायी होंगे। सांख्य दर्शन भी सम्पूर्ण मानव को त्रिविध दुःखों से मुक्ति ही दिलाना चाहते हैं। जब पुरुष अपनी अज्ञानता से मुक्त होकर अपने पूर्ण स्वरुप को पहचान लेता है, तब वह अपवर्ग को प्राप्त कर लेता है। दुःख अन्याय, भेदभाव से ऊपर उठकर अपनी मुक्ति प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार दोनों दार्शनिकों का मूल मन्तव्य मानव का विकास और संसार में प्रेम और विश्वबंधुत्व की भावना का संचार करना है। डार्विन के विकासवादी सिद्धांत ने एक तरह से आधुनिक युग में भारतीय आध्यात्मिक विकासवाद सिद्धांत की वैज्ञानिकता पर प्रश्न खड़ा कर दिया है। लेकिन सांख्य दर्शन जैसी प्राचीन भारतीय दर्शन परंपरा में विकासवाद श्री अरविन्द द्वारा स्थापित अद्वैत दर्शन के साथ विकासवाद में भी क्रमिकता (जो वैज्ञानिक विकास का लक्षण है) का महत्वपूर्ण स्थान दिया है। डार्विन का विकास जैविक विकास एवं वैज्ञानिक विकासवाद की स्थापना है।

Copyright @ 2023 Author

विकास व्यवस्थित एवं क्रमिक परिवर्तनों द्वारा प्रगति का एक सिद्धांत है इस सिद्धांत को प्राचीन यूनानी दर्शन और उपनिषदों से लेकर आज तक किसी न किसी रूप में स्वीकार किया जाता रहा है। यह एक विलक्षण बात है कि उपनिषदों ने और यूनानी दार्शनिकों ने भी चार मुख्य तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु) को सामान्य रूप से विश्व– रचनात्मक मूल उपादान के रूप में स्वीकार किया है। थेलीज ने जल, एनेक्जिमेनीज, एक्जिमेण्डर, पाइथागोरस तथा डायोजीनिस ने वायु, हेराक्लाइटस ने अग्नि, एम्पीडोक्लीज ने पृथ्वी, जल, अग्नि तथा वायु को जगत् का मूल कारण बताया है। भारत में वैदिक काल में भी मनुष्य के विचार अग्नि, जल और पृथ्वी से सम्बद्ध पाये जाते हैं, किन्तु भारतीय दर्शनों में सांख्य दर्शन ने ही सर्वप्रथम विकास का सुव्यवस्थित सिद्धांत प्रतिपादित किया है। दर्शन के क्षेत्र में विकासवाद को यंत्रवादी और प्रयोजनवादी दो वर्गों में विभाजित किया गया है।यंत्रवाद के अनुसार विकास बिना किसी उद्देश्य के यंत्रात्मक ढंग से आगे बढ़ता है। इस सिद्धांत के समर्थक डार्विन और हर्बट स्पेंसर हैं। दूसरी तरफ प्रयोजनवाद का मानना है कि समस्त विकास क्रम किसी उद्देश्य अथवा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिचालित है पाश्चात्य दर्शन में इसके प्रमुख समर्थक अरस्तू एवं हेगल हैं आगे चलकर बर्गसाँ ने सृजनात्मक विकासवाद तथा लॉयड मार्गन और एलेक्जेण्डर ने उद्गामी विकासवाद का निरुपण किया। भारतीय दर्शन में सांख्य दर्शन एवं श्री अरविन्द प्रयोजनात्मक विकासवाद के प्रमुख प्रतिनिधि हैं।

उपनिषदों और गीता में भी सर्वांग आत्मा के विचार की झलक मिलती है, परन्तु श्री अरविन्द ने ही सर्वप्रथम आत्मा के मार्ग में विभिन्न सोपानों में सूक्ष्म भेदों की खोज की और उसकी प्राप्ति के हेतु एक सर्वांग योग की स्थापना की। जैसा कि उसने निर्देश किया है कि सच्चिदानन्द की प्रगति में ब्रह्म–चेतना केवल एक निम्न सोपान है। इस प्रकार निरपेक्ष पर ब्रह्म है।अतिमानस तक ब्रह्म से परे है। श्री अरविन्द ने लिखा है कि वह अति मानस के स्तर पर पहुंचने के बहुत पहले ब्रह्म चेतना पर पहुँच चुका था। मानस से अतिमानस के बीच अनेक ज्योतिर्मय क्षेत्र पड़ते हैं, परन्तु हेगेल इत्यादि अन्य दार्शनिकों के विरुद्ध श्री अरविन्द कभी भी एक निरपेक्ष दर्शन अथवा निरपेक्ष के पूर्ण ज्ञान पर पहुँचने का दावा नहीं करता। उसने भौतिक जीवन समस्त सत्ताओं का अतिमानसीकरण करने का प्रयत्न किया, जिसमें जगत की प्रकृति का रूपान्तर भी सम्मिलित था। यह कहा जाता है कि स्थूल स्तर का अतिमानसीकरण करने के प्रयास में उसने अपना शरीर छोड़ दिया और नीचे से धक्का देने के लिये निश्चेतना में चला गया। इन विवादास्पद बातों की पुष्टि करने का प्रयास न करते हुए हमारा केवल यही कहना है कि एक सच्चे दार्शनिक के समान श्री अरविन्द ने कभी भी पूर्ण सत्य पर पहुँचने का दावा नहीं किया।

आध्यात्मिकता के स्वभाव के प्रसंग में श्री भरविन्द ने ही सर्वप्रथम आत्मा में चैत्यीकरण और संश्लिष्टता के स्थान पर जोर दिया। दर्शन में श्रात्मा का प्रत्यय कोई नया नहीं है। वह हेगेल, कोचे, शंकर, ब्रेडले तथा अनेक अन्य पूर्वीय और पाश्चात्य दार्शनिकों में पाया जाता है, परन्तु हम कहीं भी एक सच्चा सर्वांग दृष्टिकोण नहीं पाते। श्री अरविन्द के अनुसार आत्मा तन, मन और प्राण का संश्लिष्ट और रूपान्तरित करती है।अतः आध्यात्मिक दर्शन में सब प्रकार के अनुभवों का स्थान है।

विकास के सिद्धान्त के अनुरूप श्री अरविन्द ने विज्ञानमय युग के अवतरण की घोषणा की है। गम्भीर विचारकों के समान वह मानव के वर्तमान गम्भीर संकट को देखता है और खतरे की चेतावनी देता है। निदान मानव से अतिमानव की ओर आरोहण है और उसका समस्त जीवन इसी कार्य के लिये अर्पण था। वर्तमान स्थिति कितनी भी निराशावादी क्यों न हो परन्तु फिर भी श्री अरविन्द के आशावाद के अपने कारण हैं। यह सब सामान्य योजना के अनुरूप है। श्री अरविन्द स्वयं भी विस्तार पर जोर न देकर स्थूल रूपरेखा का ही समर्थन करता है। मानव ने अनेक सुलझावों का प्रयोग किया है। मौखिक रूप से श्री अरविन्द का सुलभाव अन्य वादों से कहीं अधिक समीचीन है और यह आशा करने के लिये पर्याप्त कारण हैं कि व्यावहारिक रूप से भी वह अधिक उत्तम सिद्ध होगा।

हमारे युग का दर्शन

इस प्रकार श्री अरविन्द का आध्यात्मिक विकासवाद हमारा युग दर्शन है । वह हमारे युग की सभी माँगों का प्रतिनिधित्व करता है। वह प्राचीन और नवीन, पूर्व और पश्चिम यथार्थवाद और आदर्शवाद, व्यवहारवाद और आध्यात्मिकतावाद का समन्वय करता है। गतिहीन, मायावादी और आदर्शवादी सिद्धान्त पलायनवाद, निराशावाद और सामाजिक, राजनैतिक विश्रृंखलन की ओर ले जाते हैं। मानव जीवन की सभी समस्यायों को सुलझाने वाला और सभी ज्ञान को एक सर्वांग पूर्ण में व्यवस्थित करने वाला एक विश्वरूप दर्शन ही मानवता की सेवा कर

 Copyright @ 2023 Author

सकता है। श्री अरविन्द ने इस दिशा में मार्ग दिखलाया है। यह आवी दार्शनिकों. पर छोड़ दिया गया है कि वे स्थूल रूपरेखा को समझें और मानव जाति के पुनर्जागरण में सच्चाई से अपना भाग बँटाने के लिये एक स्वनामधन्य दर्शन विकसित करें।

संदर्भ ग्रंथः

1. शर्मा चन्द्रधर; भारतीय दर्षन : आलोचन और अनुषीलन, मोतीलाल बनारसी दास, पटना, 2004
2. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन; भारतीय दर्षन, भाग–2 मोतीलाल बनारसी दास, नई दिल्ली, 2000
3. डॉ. शर्मा, रामनाथ; श्री अरविंद का सर्वांग दर्षन, अनु प्रकाषन मेरठ कैंट, 1972
4. लल, बसंत कुमार, समकालीन भारतीय दर्षन, मोतीलाल बनारसी दास, नई दिल्ली, 2006
5. पं. शास्त्री,, उदयवीर; सांख्य दर्षन का इतिहास, श्री स्वामी वेदानंद जी, विराजनंद वैदिक संस्थान सहारनपुर, उत्तर प्रदेष, 1950

 Copyright @ 2023 Author